INTERNATIONAL RESEARCH FELLOWS ASSOCIATION

February 2022

E-ISSN : 2348-7143

International Research Fellows Association's

# RESEARCH JOURNEY

International E-Research Journal

Peer Reviewed, Referred & Indexed Journal

Special Issue – 286 (B)

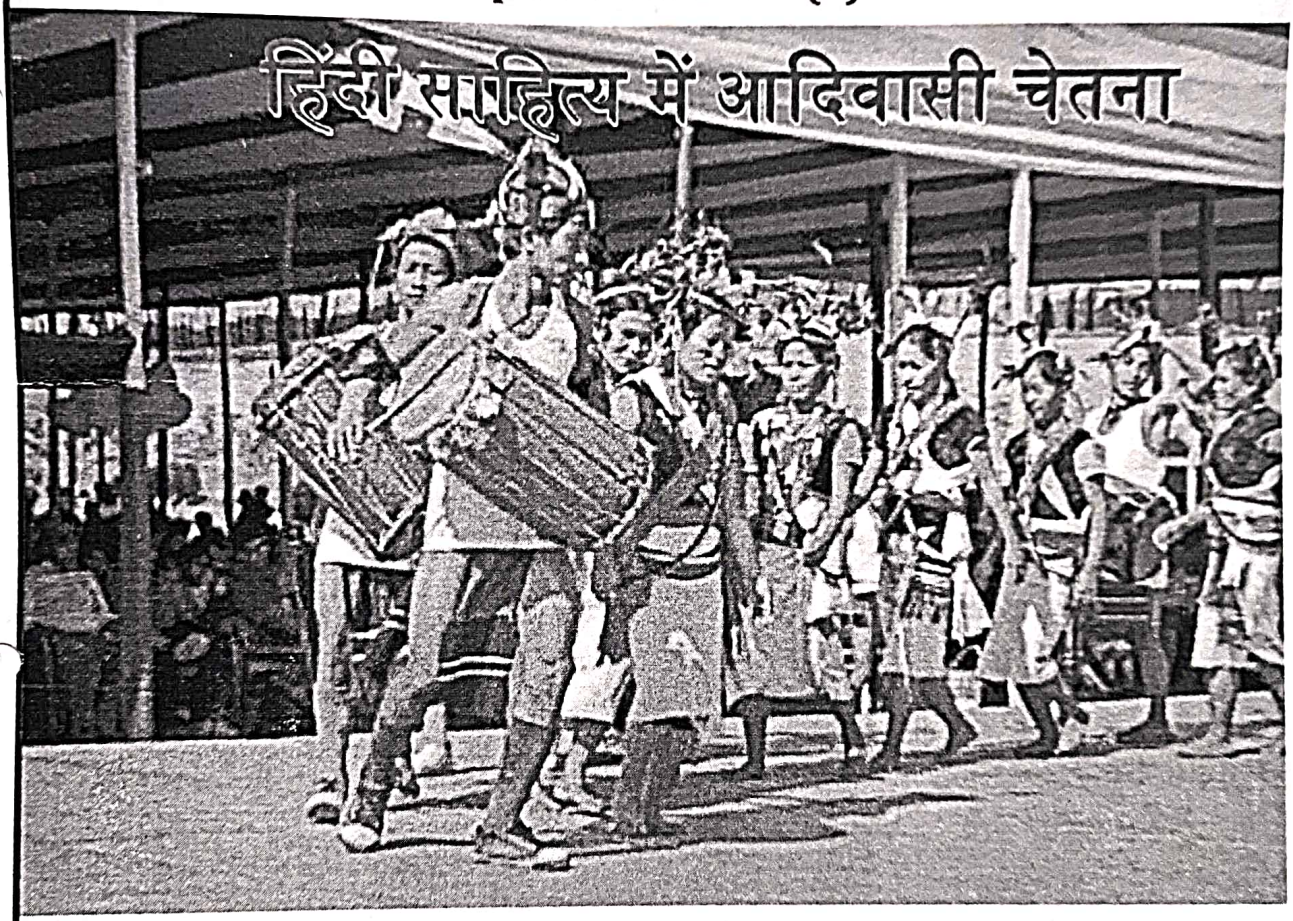


अतिथी संपादक :
डॉ. उज्जन कदम, (प्राचार्य)
समाजश्री प्रशांतदादा हिरे कला, विज्ञान
एवं वाणिज्य महाविद्यालय, नामपुर,
तह. बागलान, जि. नासिक (महाराष्ट्र)

विशेषांक संपादक :
प्रा. हर्षल बच्छाव

विशेषांक सह-संपादक :
प्रा. रवींद्र ठाकरे
प्रा. आनंदा पवार

मुख्य संपादक : डॉ. धनराज धनगर

For Details Visit To : www.researchjourney.net

SWATIDHAN PUBLICATIONS

'RESEARCH JOURNEY' International E- Research Journal
Issue – 286 (B) : हिंदी साहित्य में आदिवासी चेतना
Impact Factor : 6.625 Peer Reviewed Journal
E-ISSN : 2348-7143
February-2022

# अनुक्रमणिका


| अ.क्र. | शीर्षक | लेखक/लेखिका | पृ.क्र. |
|---|---|---|---|
| ०१ | 'धरती आबा' नाटक में चित्रित आदिवासी चेतना | डॉ. योगिता हिरे, प्रो. डॉ. अनिता नेरे | ०७ |
| ०२ | आदिवासी समाज : वर्तमान दशा और दिशा | डॉ. अशोक जाधव | १३ |
| ०३ | महादेव टोप्पो की कविताओं में आदिवासी चेतना | प्रो. डॉ जिभाऊ मोरे | १७ |
| ०४ | हिंदी काव्य विधा में आदिवासी चेतना | डॉ. पूनम बोरसे | २२ |
| ०५ | हिंदी काव्य में आदिवासी चेतना | डॉ. राजाराम शेवाले | २९ |
| ०६ | आदिवासी कहानियों में चेतना के स्वर | डॉ. रघुनाथ वाकळे | ३३ |
| ०७ | कवि बृजेश सिंह की गज़लों में अभिव्यक्त आदिवासी चेतना | प्रा.रविंद्र ठाकरे, प्रो. डॉ. अनिता नेरे | ३८ |
| ०८ | आदिवासी विमर्श | प्रा. के. के. बच्छाव | ४३ |
| ०९ | लोक संस्कृति का संवाहक - आदिवासी समाज | डॉ. यशोदा मेहरा | ४५ |
| १० | हिंदी काव्य नाटक विधा में आदिवासी चेतना | डॉ. व्ही. डी. सूर्यवंशी | ४९ |
| ११ | निर्मला पुतुल की कविताओं में आदिवासी स्त्री विमर्श | प्रा. हंसा बागरे | ५२ |
| १२ | हिंदी मौखिक इतिहास मे आदिवासी चेतना | डॉ. ज्योती रामोड | ५७ |
| १३ | राजेंद्र अवस्थी के उपन्यास में आदिवासी विमर्श | डॉ. सीताबाई पवार | ६० |
| १४ | हिंदी कविताओं में आदिवासी चेतना | डॉ. योगिता घुमरे | ६४ |
| १५ | उपन्यास साहित्य में चित्रित आदिवासी जीवन संघर्ष | प्रा. निलेश पाटील | ६७ |
| १६ | हिंदी साहित्य में आदिवासी चेतना | प्रा. निलेश देशमुख | ७० |
| १७ | कथाकार संजीव के 'धार' उपन्यास में चित्रित आदिवासी चेतना | डॉ. अनिता राजबंशी, प्रो. डॉ. अनिता नेरे | ७४ |
| १८ | आदिवासी समाज और हिंदी नाटक | डॉ. दीपा कुचेकर | ७९ |
| १९ | हिंदी उपन्यास विधा में आदिवासी चेतना | डॉ. बाबासाहेब रसूल शेख | ८५ |
| २० | हिन्दी साहित्य में आदिवासी चेतना | प्रा. जगदीश पाटनवार | ८८ |
| २१ | २१ वी सदी के हिंदी काव्य में आदिवासी चेतना | डॉ. संदिप देवरे | ९१ |
| २२ | 'मौन घाटी' उपन्यास में आदिवासियों का सामाजिक जीवन | प्रा. हर्षल बच्छाव, प्रो. डॉ. अनिता नेरे | ९४ |
| २३ | हिंदी काव्य विधा मे आदिवासी चेतना | प्रा. दिपक आहिरे | ९७ |
| २४ | समकालीन आदिवासी साहित्य में जन चेतना | प्रा. राकेश पगार | १०० |


*Our Editors have reviewed papers with experts' committee, and they have checked the papers on their level best to stop furtive literature. Except it, the respective authors of the papers are responsible for originality of the papers and intensive thoughts in the papers. Nobody can republish these papers without pre-permission of the publisher.*

***- Chief & Executive Editor***

'RESEARCH JOURNEY' International E- Research Journal
Issue – 286 (B) : हिंदी साहित्य में आदिवासी चेतना
Impact Factor : 6.625 Peer Reviewed Journal
E-ISSN : 2348-7143
February-2022

# हिंदी काव्य नाटक विधा में आदिवासी चेतना

**प्रा. डॉ. व्ही. डी. सूर्यवंशी**
सहायक प्राध्यापक,
महाराजा सयाजीराव गायकवाड महाविद्यालय,
मालेगांव कैम्प जिला नासिक.
मो.९४२१६०४६२४, E-Mail - valmiksuryawanshi123@gmail.com

भारतीय संस्कृति धर्मनिष्ठ रही है किसी भी उत्पत्ति का मूल ` ब्रह्मा `को माना जाता है| `ब्रह्मा` 'वेदों' और 'नाटक' की सृष्टा माने जाते हैं | भरत मुनि ने अपने ग्रंथ 'नाट्यशास्त्र' में 'नाटक' दिव्य उत्पत्ति का परिणाम माना है| उनका मानना है कि इंद्र तथा अन्य देवताओं ने ब्रह्मा से सभी श्रेणियों के मनुष्यों के 'मनोविनोद' हेतु एक साधन करने की प्रार्थना की, तत्पश्चात 'ब्रह्मा' ने चारों वेदों पर विचार करके 'ऋग्वेद' से पाठ्य, 'सामवेद' से गीत 'यजुर्वेद' से अभिनय (नृत्य) तथा 'अथर्ववेद' से रसग्रहण कर पंचम वेद यानी नाट्य वेद की रचना की |

"जग्राह पाठ्य ऋग्वेदात्सामभ्यों गीतमेवच |
यजुर्वेदा दभिनयान रसानाथर्वणादापि ||" (नाट्यशास्त्र भरतमुनि)१

भारतीय आचार्यो ने काव्य के दो भेद श्रव्य और दृश्य स्वीकार किए हैं | श्रव्य काव्य के अंतर्गत महाकाव्य, खंडकाव्य तथा मुक्तक काव्य आदि और दृश्य काव्य के अंतर्गत रूपक, नाटक आदि लिए गए हैं | परंतु हिंदी साहित्य के नित्य प्रति विकास के कारण, जिसमें आधुनिकता की झलक स्पष्ट लक्षित होती है, अनेक नवीन विधाएं जन्म ले रही है |२ जहां कहीं भी कवि या लेखक उस विधा में अपनी संवेदना की प्रेषनियता में कठिनाई का अनुभव करता है, वह दूसरी ओर नाटक विधा का आश्रय ले लेता है |

**नाटक की उत्पत्ति**

'नाटक' शब्द संस्कृत की 'नट' धातु से बना है,जिसका जिसका अर्थ होता है अभिनव करना | नाटक की उत्पत्ति 'दशरूपककम' के अनुसार 'नट' धातु से मानी गई है| रूपक दृश्य काव्य की विधा है और नाट्य 'शब्द वाचक के रूप में माना जाता है |आचार्य धनंजय ने अपने ग्रंथ 'दशरूपकम ' में नृत्य और नाट्य के भेद को स्पष्ट किया है| नृत्य ताल- लय पर आश्रित होता है | नृत्य भावाश्रित होता है और नाट्य रस आश्रित होता है |३

**काव्य नाटक की परिभाषा**

पिशेल "कठपुतलियो के खेल व् नाच से नाट्य साहित्य की उत्पत्ति है |"

टी एस इलियट "जीवन के विविध सूत्रों और समस्याओं का लेखक अपने व्यक्तित्व में एकान्वित नहीं कर सकता और न जीवन के सघन शनो का गद्य के माध्यम से पूरी अभिव्यक्ति दे सकता है इस प्रकार के जनों को कविता की भापा में ही वाणी मिल सकती है |"

**हिंदी काव्य नाटकों में आदिवासी विमर्श :**

मनुष्य की विविध योजनाओं की सर्वोत्तम परिणीति का नाम संस्कृति है भारतीय संस्कृति अपनी प्राचीनता के लिए ही नहीं बल्कि अपने जीवनादर्शों के लिए भी प्रसिद्ध है | अनेकता में एकता का संदेश भारतीय संस्कृति की महत्वपूर्ण देन है |यह संस्कृति मानव जीवन को समन्वय का सार है | परिणाम स्वरूप सभी लोगों को समान रूप से प्रतिष्ठापित करने के लिए समाज के पिछड़े वर्गों को भी देश की मुख्यधारा में

लाने का प्रयत्न किया गया है| नरेंद्र देव पाण्डेय न 'शबरी' काव्य नाटक में रामायण की एक पात्रा' शबरी' के माध्यम से आदिवासी की दयनीय दशा का मार्मिक चित्रण करते हुए अपने अधिकारों के प्रति सचेत होने की प्रेरणा दी है यद्यपि हमारे संविधान में आदिवासियों के लिए विशेष सुविधाओं का प्रावधान है, तथापि अशिक्षा के कारण दलितों को अपने अधिकारों का ज्ञान ही नहीं अतः यह कार्य समाज सुधारो को कोही वह करना पड़ता है शबरी काव्य नाटक में राम एक समाज सुधारक के रूप में दलितों का उद्धार का बीड़ा उठा लेते है -

"जो रह रहे अभिशप्त
दूर इस उपेक्षित अरण्य में ,
जी रहे हैं किसी भांति ,
तिमिर में बनकर दलित,
पहले उनका उत्थान करना
है दिखाना ज्ञान ज्योति|
करके शिक्षित और समर्थ ,
बनाना है सबको पूर्ण मानव|"

एक अकेला मानव दलितों का उद्धार नहीं कर सकता आदिवासियों को स्वयं आगे बढ़ना पड़ेगा | यह कार्य शिक्षा द्वारा ही संपन्न हो सकता है -

"यह असंभव है
संपूर्ण जनजाति जो,
जंगलों में रह रही हैं,
अज्ञानता के तमस में
युगो से भटक रही हैं|"

लक्ष्मण राम को सीता प्राप्त करने के लिए युद्धरत होने की प्रेरणा देते हैं ,परंतु राम सीता को ढूंढने से पहले इन पिछड़ी जातियों को देश की मुख्यधारा में सम्मिलित करना चाहते हैं ताकि उन्हें साथ देकर सीता को ढूंढें-

" ये वो जातियां हैं
जो अब भी अशिक्षित
परे सभ्यता से
वनों में रह रही हैं
पहले उन्हें अपनी संस्कृति सिखाना है |"
शिक्षित कर सबको
समता में लाना है
उनका उद्धार कर
संग ले उन्हीं को
तब हम ढूंढगे,
खोई हुई सीता को |"

**निष्कर्ष :**

भारतीय समाज में वर्ण व्यवस्था तथा जाति - पाति प्रथा के कारण आदिवासी वर्णों का जो शोषण हुआ उसका उसके प्रति भी हमारे काव्य नाटककारों में अपनी जागरूकता का परिचय दिया है, जिसमें उपेक्षित सुधार

का भाव विहित है| आदिवासी को जन्मगत न मानकर कर्मगत माना है| प्रारंभ में राजा को ईश्वरीय सत्ता का प्रतीक माना जाता रहा है, और उसके द्वारा दिया गया यह ईश्वरीय विधान था| कालांतर में ईश्वरीय न्याय का स्थान मानवीय संवेदना एवं संचेतना के आधार पर निश्चित विधान ने ले लिया यह विधान मानवीय सामाजिक जीवन को नियमित करने के लिए सर्वाधिक उपयुक्त है |परंतु जब कभी नैसर्गिक नियमों पर आधारित अधिकारों का हनन हुआ, जागरूक व्यक्तियों ने इसके विरुद्ध सशक्त स्वर उठाया है| ताकि शासक एवं शासित में सांजे सुख-दुख की भावना का संचार हो सके |

**संदर्भ सूचि -**

१. हिंदी नाट्य विमर्श -सं. डॉ. सदानंद भोसले-पृष्ठ-११
२. हिंदी काव्य नाटको का अध्ययन- डॉ. परविंदर कौर पृष्ठ -१३
३. दशकरूपकम १\९
४. हिंदी काव्य नाटको का अध्ययन -डॉ. पर्विंदर कोर-पृष्ठ १४
५. नरेंद्र देव पाण्डेय- पृष्ठ - ८५
६. वही- पृष्ठ -१५
७. वहीं -पृष्ठ- ९०

RESEARCH JOURNEY